

॥२४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥ ३१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ इतिकर्णपर्वणिलैककंठीयेभारत

पादबंधंतश्चक्रेपांडवः परवीरहा ॥ नागमखं महाराजसंप्रकीर्य मुहुर्मुहुः ॥ २४॥ तेवद्धाः पादबंधेन पांडवेन महात्मना ॥ निश्चेष्टाश्चाभवन् राजन्नाश्मसारमया
इव ॥ २५॥ निश्चेष्टांस्तुततो यो धानवधीत्यां दुन्दनः ॥ यथेन्द्रः समरे देत्यां स्तारकस्य वधेपुरा ॥ २६॥ तेवध्यमानाः समरे मुमुचुस्तं रथोत्तमं ॥ आयुधानि च सर्वा
णि विसृष्टुमुपचक्रमुः ॥ २७॥ तेवद्धाः पादबंधेन न शेषकुश्चेष्टितुं नृप ॥ ततस्तानवधीत्यार्थः शरैः सन्नतपर्वभिः ॥ २८॥ सर्वयोधा हि समरे भुजगैर्विष्टिता भवन् ॥ या
नुद्दिश्यरणे पार्थः पादबंधं चकार ह ॥ २९॥ ततः सुशर्मा राजेंद्रगृहीतां वीक्ष्य वाहिनीं ॥ सौपर्णमखं त्वरितः प्रादुश्चक्रे महारथः ॥ ३०॥ ततः सुपर्णाः संपेतुर्भक्षयंतो
भुजंगमान् ॥ तैवैविदुर्दुवुर्नागा हृत्वा तान् खचरान् नृप ॥ ३१॥ बभौ बलंतद्विमुक्तं पादबंधाद्विशांपते ॥ मेघदंदाद्यथामुक्तो भास्करस्तापयन्नजाः ॥ ३२॥ विप्रमु
क्तास्तु ते योधाः फाल्गुनस्य रथं प्रति ॥ सस्तु जुर्वाणसंघांश्च शस्त्रसंघांश्च मारिष ॥ ३३॥ विविधानि च शस्त्राणि प्रत्यविध्यंत सर्वशः ॥ तां महास्त्रमयीं दृष्टिं संछिद्य श
रदृष्टिभिः ॥ ३४॥ न्यवधीच्छततो यो धान्वासविः परवीरहा ॥ सुशर्मा तु ततो राजन्वाणेनानतपर्वणा ॥ ३५॥ अर्जुनं तदये विध्वा विव्याधान्यैस्त्रिभिः शरैः ॥ स
गाढविद्धो व्यथितो रथोपस्थ उपाविशत् ॥ ३६॥ तत उच्चुक्रुशुः सर्वेहतः पार्थ इति स्मह ॥ ततः शंखनिनादाश्च भेरीशब्दाश्च पुष्कलाः ॥ ३७॥ नानावादित्रनिनदाः
सिंहनादाश्च जज्ञिरे ॥ प्रतिलभ्यततः संज्ञांश्चेताश्चः कृष्णसारथिः ॥ ३८॥ ऐंद्रमखममेयात्मा प्रादुश्चक्रे त्वरान्वितः ॥ ततो बाणसहस्राणि समुत्पन्ना निमारिष ॥
॥ ३९॥ सर्वदिक्षु व्यहस्यंत निघ्नं तितव वाहिनीं ॥ हयान् रथांश्च समरे शस्त्रैः शतसहस्रशः ॥ ४०॥ वध्यमाने ततः सैन्ये भयं सुमहदा विशत् ॥ संशप्तकगणानां च
गोपालानां च भारत ॥ ४१॥ न हितत्रपुमान्कश्चिद्योर्जुनं प्रत्यविध्यत ॥ पश्यतां तत्र वीराणामहं न्यत बलंतव ॥ ४२॥ हन्यमानमपश्यंश्च निश्चेष्टं स्मपराक्रमे ॥
अयुतं तत्र यो धानां हत्वा पांडुसुतोरणे ॥ ४३॥ व्यभ्राजत महाराज विधूमो भिरिवज्ज्वलन् ॥ चतुर्दशसहस्राणि यानि शिष्टानि भारत ॥ ४४॥ रथानामयुतं चै
व त्रिसाहस्राश्च दंतिनः ॥ ततः संशप्तकाभूयः परिवव्रुर्धनं जयं ॥ ४५॥ मर्तव्यमिति निश्चित्य जयं वाप्यनिवर्तनं ॥ तत्र युद्धं महत्वासीत् तावकानां विशांपते ॥
शूरेण बलिना साधं पांडवेन किरीटिना ॥ ४६॥ इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि संकुल युद्धे त्रिपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५३॥ ॥ ४७॥ ॥ ४८॥ ॥ ४९॥ ॥ ५०॥ ॥ ५१॥ ॥ ५२॥ ॥ ५३॥

भावदीपे त्रिपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५३॥ ॥ ५४॥ ॥ ५५॥ ॥ ५६॥ ॥ ५७॥ ॥ ५८॥ ॥ ५९॥ ॥ ६०॥ ॥ ६१॥ ॥ ६२॥ ॥ ६३॥ ॥ ६४॥ ॥ ६५॥ ॥ ६६॥ ॥ ६७॥ ॥ ६८॥ ॥ ६९॥ ॥ ७०॥ ॥ ७१॥ ॥ ७२॥ ॥ ७३॥ ॥ ७४॥ ॥ ७५॥ ॥ ७६॥ ॥ ७७॥ ॥ ७८॥ ॥ ७९॥ ॥ ८०॥ ॥ ८१॥ ॥ ८२॥ ॥ ८३॥ ॥ ८४॥ ॥ ८५॥ ॥ ८६॥ ॥ ८७॥ ॥ ८८॥ ॥ ८९॥ ॥ ९०॥ ॥ ९१॥ ॥ ९२॥ ॥ ९३॥ ॥ ९४॥ ॥ ९५॥ ॥ ९६॥ ॥ ९७॥ ॥ ९८॥ ॥ ९९॥ ॥ १००॥